इकाई - *III*

7. भक्ति पद

-रैदास, मीराबाई

उन्मुखीकरण

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

प्रश्न

1. भगवत भक्ति का ज्ञान कौन देता है?
2. गुरु को किससे श्रेष्ठ बताया गया है? क्यों?
3. 'निराडंबर भक्ति भावना' का क्या महत्व है?

उद्देश्य

छात्रों को प्राचीन साहित्य से अवगत कराते हुए उनमें काव्य रचना की विविध शैलियों का ज्ञान कराना है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न कर निराडंबर भक्ति मार्ग का महत्व बताना है।

विधा विशेष

इसमें एक चौपाई और एक पद है। चौपाई मात्रिक सम छंद है। चौपाई और पद विशेष लय और ताल से गाये जाते हैं। जो बच्चों के रागात्मक मन को छू लेते हैं। चौपाई छंद चार पंक्तियों का होता है, इसकी प्रत्येक पंक्ति में सोलह मात्राएँ होती हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *प्राचीन काल से ही भगवत-स्मरण, भगवत-भक्ति को महत्व दिया गया है। भगवान के नाम रूपी नाव से ही संसार रूपी सागर से तर सकते हैं। इसकी सही राह का मार्गदर्शन गुरु द्‌वारा होता है। ऐसी ही भक्ति संबंधी रैदास की चौपाइयाँ और मीराबाई के पद हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।*

कवि : रैदास
जीवनकाल : सन् 1482 – सन् 1527
प्रसिद्‌ध रचना : 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इनके पद संकलित हैं।
विशेष : ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवियों में से एक।

प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
जाकी अँग-अँग बास समानी।।
प्रभुजी, तुम घन-बन हम मोरा।
जैसे चितवहि चंद्र चकोरा।।
प्रभुजी, तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा।।
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

प्रश्न
1. प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?
2. कवि ने अपने आप को मोर क्यों माना होगा?

कवयित्री : मीराबाई
जीवनकाल : सन् 1498 – सन् 1573
प्रसिद्‌ध रचना : *मीराबाई पदावली*
विशेष : कृष्णोपासक कवयित्रियों में श्रेष्ठ। माधुर्य भाव प्रयोग में पटु।

पायो जी म्हें तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पायी, जग में सभी खोवायो।
खरच न खूटै, चोर न लूटै, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस पायो।।

3. संत किसे कहते हैं?
4. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति कैसी है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. रैदास व मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।
2. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।

(आ) पंक्तियाँ उचित क्रम में लिखिए।

1. प्रभुजी, तुम पानी हम चंदन।
2. मीरा के प्रभु नागर गिरिधर, हरख-हरख पायो जस।।

(इ) नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
2. प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मैया मोरि मैं नहिं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो साँझ परे घर आयो,
मैं बालक बहिंयन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लपटायो,
यह ले अपनी लकुटी कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
तब बिहंसी जसोदा, लै उर कंठ लगायो। - महाकवि सूरदास

1. कृष्ण किनसे बातें कर रहे हैं?
   (अ) यशोदा (आ) देवकी (इ) सीता (ई) पार्वती
2. कृष्ण गायों को चराने कहाँ जाते हैं?
   (अ) मधुबन (आ) शांतिवन (इ) राजवन (ई) सुंदरवन
3. कृष्ण घर कब लौटते हैं?
   (अ) सुबह (आ) दोपहर (इ) शाम (ई) रात
4. कृष्ण की बाहें कैसी हैं?
   (अ) छोटी (आ) मोटी (इ) चौड़ी (ई) लंबी
5. 'बैर' शब्द का अर्थ क्या है?
   (अ) मित्र (आ) मित्रता (इ) शत्रु (ई) शत्रुता

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. रैदास जी ने ईश्वर की तुलना चंदन, बादल और मोती से की है। आप ईश्वर की तुलना किससे करना चाहेंगे? और क्यों?
2. मीरा की भक्ति भावना कैसी है? अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) **'मीरा के पद' का भाव अपने शब्दों में लिखिए।**

(इ) **भक्ति भावना से संबंधित छोटी-सी कविता का सृजन कीजिए।**

(ई) **भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है?**

भाषा की बात

(अ) **सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।**

1. प्रभु, पानी, चंद्र (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. स्वामी, गुरु, दिन (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. चदंन, सबी, भख्ति (वर्तनी सही कीजिए।)

(आ) **सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।**

1. बन, रतन, किरपा (तत्सम रूप लिखिए।)
2. जग, नाँव, अमोलक (अर्थ लिखिए।)

(इ) **वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।**

1. <u>मोती</u> सागर में मिलता है।
2. धागे से <u>माला</u> बनती है।
3. <u>मोर</u> सुंदर पक्षी है।

(ई) **1. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। पाठ के अनुसार उचित शब्द लिखिए।**

हे प्रभुजी! तुम
- चंदन।
- ....।
- ....।
- ....।

हे प्रभुजी! हम
- पानी ।
- ....।
- ....।
- ....।

2. कविता में प्रयुक्त होने वाले वर्ण, मात्रा, यति आदि के संगठन को छंद कहते हैं। चौपाई छंद एक मात्रिक सम छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण :

। । ऽ । । ऽ । । । । ऽ ऽ
प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
ऽ ऽ । । । । ऽ । । ऽ ऽ
जाकी अँग-अँग बास समानी।।
। । ऽ । । । । । । । । ऽ ऽ
प्रभुजी, तुम घन-बन हम मोरा।
ऽ ऽ । । । । ऽ । । ऽ ऽ
जैसे चितवहि चंद्र चकोरा।।

परियोजना कार्य

''भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है न कि ठाट-बाट और आडंबरों से'' इस भावना को दर्शाने वाली किसी कविता का संग्रह कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।